नये मसीहियों के लिए बाधायें (9:19-31; 22:17-21)

प्रेरित पौलुस ने अक्सर मसीही जीवन की तुलना एक दौड़ से की है (1 कुरिन्थियों 9:24-27; 2 तीमुथियुस 4:7, 8)। कई लोगों के लिए, मसीही जीवन एक छोटी और तेज़ दौड़ के समान है अर्थात वे पूरे मार्ग में तेज गति से चल सकते हैं परन्तु हम में से अधिकांश लोगों के लिए, यह एक लम्बी मैराथन दौड़ है। तथापि, जो दौड़ पौलुस के सामने थी, वह *बड़ी बाधा* युक्त दौड़ के समान थी। जल के बपतिस्मे से ऊपर आते ही, उसे बाधाओं को पार करना था और उन पर विजय पानी थी। इस पाठ में, हम पौलुस की आरम्भिक सेवकाई का अध्ययन जारी रखेंगे। अध्ययन करते हुए, हम उन कुछ बाधाओं पर ध्यान देंगे जिनका सामना पौलुस को करना पड़ा था। उसकी चुनौतियां भी वैसी ही थीं जिनका सामना मसीह में बहुत से बालकों को करना पड़ता है, इसलिए हम विशेष रूप से देखना चाहेंगे कि उसने उन पर कैसे काबू पाया।

असफलता की बाधा (9:19-22)

माता-पिता के लिए सबसे अधिक उत्तेजना भरे पल वे होते हैं जब उनका बच्चा पहला कदम उठाता है। वह एक कदम उठाता है और चलकर नीचे गिर जाता है। फिर वह कोशिश करता है। दूसरे कदम के बाद, वह एक बार फिर छप से गिर जाता है। धीरे-धीरे वह गिरने से पहले दो कदम, फिर तीन, और फिर अधिक कदम उठाता है। मुझे अपनी दूसरी बेटी, डैबी के पहले कुछ कदमों की घर में बनाई हुई फिल्म देखना अच्छा लगता है। उसने चलना नहीं बल्कि भागना शुरू किया था। (अभी भी वह कम नहीं है!) तथापि हमारी फिल्म में ठुमकते हुए डैबी कई बार गिर गई। विचार कीजिए यदि डैबी पहले दो या तीन प्रयासों के बाद न उठती तो? वह अब हमारी एक ऐसी जवान बेटी होती जिसे इधर-उधर उठाकर ले जाना पड़ता!

बच्चों की तरह ही मसीह में बालकों को चलना *सीखना* पड़ता है। बच्चे जितनी बार गिरते हैं, उतनी बार नहीं तो कुछ बार तो वे गिरेंगे ही। प्रश्न यह नहीं है कि "क्या नये मसीही कई बार मसीही जीवन और सेवा के आदर्श से गिर जाएंगे?" वचन और अनुभव बताता है कि वे गिरेंगे। महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि "गिर कर, क्या वे *उठेंगे और प्रयास जारी रखेंगे*?"

शाऊल ने स्पष्टतया दमिश्क और यरूशलेम में अपने आरम्भिक प्रयासों को *असफलताओं* के रूप में देखा। उसने बाद में दमिश्क से आधी रात के अपने बचाव को अपनी *निर्बलता*

का एक उदाहरण बताया है (2 कुरिन्थियों 11:30, 32, 33)। बाद में अपने बचाव के विषय में लिखते हुए उसने संकेत दिया कि वह अनिच्छा से वहां से छोड़ कर गया था (22:17-21)। *तथापि, शाऊल विश्वास से असफलता की बाधा को दूर कर सका था*। उसने छोड़ा नहीं; उसने अपने आपको उठाया और दोबारा कोशिश की।

मसीही जीवन के आरम्भ के लिए, शाऊल से प्रेरणा लें: असफलता को अन्तिम न बनने दें। जब आप गिर जाएं, तो फिर से उठें[1] और कोशिश करें। चलना सीखने के लिए केवल यही ढंग है। छोड़ देना और कुछ न करना सुरक्षात्मक हो सकता है, किन्तु यह आपको आत्मिक रूप से पंगु और हमेशा के लिए दूसरों पर निर्भर रहने वाला बना देगा![2]

मैंने और मेरी पत्नी ने हाल ही में कुछ समय ब्रासोव व रोमानिया में बिताया। मैं वहां के मसीहियों की उन्नति को देखकर प्रभावित हुआ। उनकी आराधना सभाओं में, लगभग हर जवान ने वचन पढ़ा, प्रार्थना में अगुआई की, गाने में अगुआई की, या थोड़ा सा प्रचार किया ये जवान मसीही ''आसानी से'' और संकट से बचने की कोशिश करके यहां तक नहीं पहुंचे थे। वे प्रयत्न *करके* बढ़े जिसमें उनसे कई गलतियां हुई होंगी!

सताव की बाधा (9:23-25)

पिछले पाठ में हमने देखा कि, बपतिस्मा लेने के बाद शाऊल ने दमिश्क के आराधनालयों में प्रचार करना आरम्भ कर दिया। हमें यह भी पता चला कि वह अरब के उजाड़ क्षेत्र में चला गया। अरब में पहुंचकर उसने दमिश्क में फिर से प्रचार किया। ''जब बहुत दिन बीत गए, तो यहूदियों ने मिलकर उसके मार डालने की युक्ति निकाली'' (9:23)। वे तर्कों से उसका मुंह बन्द नहीं कर सके, सो उन्होंने उसकी हत्या करके उसका मुंह बन्द करने का प्रयास किया।[3] किसी ने कहा है कि ''संसार में सबूत को मिटाने के लिए लोगों को शहीदकर दिखा जाता है।'' (रिक ऐचले ने इसे उद्धृत किया।)

आयत 24 कहती है, ''परन्तु उनकी युक्ति शाऊल को मालूम हो गई।[4] वे [यहूदी] तो उसके मार डालने के लिए रात-दिन फाटकों पर लगे रहे थे।'' कुरिन्थियों को लिखते हुए, पौलुस ने यह परेशान करने वाली टिप्पणी जोड़ दी: ''दमिश्क में अरितास राजा[5] की ओर से जो हाकिम था, उसने मेरे पकड़ने को दमिश्कियों के नगर पर पहरा बैठा रखा था'' (2 कुरिन्थियों 11:32)। मैं इसे परेशान करने वाला इसलिए कहता हूं क्योंकि, पहली बात, हम यह नहीं जानते कि अरबी राजा अरितास का दमिश्क में कितना अधिकार था, जिसे साधारणतया रोमियों द्वारा नियन्त्रित किया जाता था।[6] तथापि, अधिक परेशान करने वाला तथ्य यह था कि स्पष्टतया यहूदियों और अरबियों ने शाऊल को मारने की कोशिश में सहयोग दिया था! यहूदियों और अरबियों का सहयोग तब भी उतना ही असामान्य था, जितना आज है![7] शायद यहूदियों का दमिश्क में बहुत ज्यादा राजनीतिक प्रभाव था;[8] शायद यहूदी और अरबी दोनों ही शाऊल को एक चेतावनी के रूप में देखते थे।[9] कारण कुछ भी हो, एक व्यक्ति को मारने की कोशिश के लिए दमिश्क के सभी साधन तुरन्त उपलब्ध कराए गए थे!

शाऊल का बचाव नये नियम की प्रसिद्ध कहानियों में से एक है: ''परन्तु रात को उसके चेलों[10] ने उसे लेकर टोकरे में बैठाया, और शहरपनाह पर से लटकाकर उतार दिया'' (9:25)। पौलुस ने बाद में लिखा, ''मैं टोकरे में[11] खिड़की से होकर भीत पर से उतारा गया'' (2 कुरिन्थियों 11:33)। कमरों का शहरपनाहों पर बनाया जाना आम बात थी (यहोशू 2:15)। मैं शाऊल के अपने दोस्तों में घिरे हुए, उन कमरों में से एक में भीड़ देखने की कल्पना कर सकता हूं, जिसमें उन्होंने मौन परन्तु अत्यावश्यक स्वरशैली में वह चर्चा की जो उन्हें करनी चाहिए थी। अन्ततः, एक जन कमरे से गया और फिर एक भारी रस्सी को अपने कंधे पर लपेटे और बड़े से टोकरे को उठाकर लौट आया। उसने टोकरे में पड़ी चीज़ों को निकाल दिया और शाऊल से कहा, ''इसमें बैठने की कोशिश करके देखे!'' कुछ ही मिनटों में शाऊल को अंधेरे में खिड़की से नीचे उतार दिया गया। मैं शाऊल को अंधेरे में आगे-पीछे डोलते हुए, बार-बार दीवार की ओर घूमते हुए और अन्त में जब टोकरा भूमि से टकराया तो उसे बाहर निकलते हुए देख सकता हूं।

जवानी में, मैं पौलुस के बचाव को एक रोमांचक जोखिम मानता था। पौलुस के लिए यह रोमांचक नहीं, बल्कि, एक वयस्क व्यक्ति का एक शहर से अशोभनीय निकास व्याकुल करने वाला था![12] उसने मूलतः दमिश्क से अधिकार के साथ प्रवेश और शक्ति के बड़े प्रदर्शन से (बिलखते हुए मसीहियों को बेड़ियों में बांधकर खींचते हुए) निकलने की योजना बनाने के बजाय एक अन्धे भिखारी की तरह नगर में प्रवेश किया और अब उसने एक भगौड़े की तरह इसे छोड़ा!

यदि मैं शाऊल होता, तो भागने के बाद, कोई ऐसा एकान्त स्थान ढूंढता जहां मैं लोगों का क्रोध ठण्डा होने तक छुपा रहता। परन्तु, शाऊल दक्षिण में उस नगर की ओर रवाना हुआ जहां के लोग उससे दमिश्कियों से भी अधिक घृणा करते थे अर्थात वह *यरूशलेम* की ओर रवाना हुआ।

शाऊल ने सताव की बाधा को धैर्य से दूर कर दिया। यीशु ने उनकी सराहना की ''जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं'' (लूका 8:15)।

मसीही होने से आपके जीवन को आशीष मिलेगी, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि मसीही जीवन आसान है। आपके नैतिक पतन के लिए या आपको हराने की कोशिश में, कोई आपके मसीही चलन में आपको निराश कर सकता है! यदि ऐसा होता है, तो इतना याद रखें: ''जिन लोगों का कोई महत्व नहीं, शैतान को उनकी कोई परवाह नहीं!'' मुझे एक मित्र का ध्यान आता है।[13] जब मैंने इस जवान को बपतिस्मा दिया तो वह इतना उतावला था कि उसे लगता था कि उसे जानने वाले सभी उसके बपतिस्मा लेने पर प्रसन्न होंगे; परन्तु उसके मित्रों ने समझा कि वह पागल हो गया है और उसके परिवार को भी बुरा लगा। यह सोचते हए कि सभी को नये नियम की शिक्षा स्वीकार करनी चाहिए, उसने हर किसी को जिसे भी वह जानता था, मसीही बनाने की कोशिश की परन्तु वे परिवर्तित नहीं हुए। हर बार इस जवान को मात मिली, वह उठता और फिर से कोशिश करता।

अपने धैर्य के कारण, आज जिस कलीसिया का वह सक्रिय सदस्य है वहां पर भलाई के लिए एक प्रभावशाली व्यक्ति है!

अतीत की बाधा (9:26-28)

यरूशलेम को जाते हुए, शाऊल उस स्थान से भी गुज़रा होगा जहां तीन वर्ष पूर्व प्रभु ने उसे दर्शन दिया था।[14] यात्रा में लगभग 140 मील के बाद, यरूशलेम की दीवारें नज़र आने लगी होंगी। सम्भवत: वह कलवरी की पहाड़ी से भी गुज़रा, जहां यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। वह उस स्थान से भी गुज़रा होगा जहां पर स्तिफनुस को पथराव करके मार डाला गया था। उसके मन में कितनी भावनाएं उमड़ी होंगी!

यरूशलेम पहुंचने तक उसका कोई मित्र नहीं था। उसके पुराने यहूदी साथियों को उससे कोई वास्ता नहीं था क्योंकि उसने यहूदी मत को त्याग दिया था, और मसीहियों को भी उससे कोई वास्ता नहीं होगा क्योंकि उनको पक्का विश्वास नहीं था कि उसने यहूदी मत छोड़ दिया *था*! ''यरूशलेम में पहुंचकर उस ने चेलों[15] के साथ मिल जाने का उपाय किया, परन्तु सब उस से डरते थे, क्योंकि उनको प्रतीत न होता था, कि वह भी चेला है''[16] (9:26)। उन्हें केवल शाऊल के प्रेरित होने पर ही संदेह नहीं था; बल्कि वे उसके मसीही होने पर भी संदेह करते थे! उन्हें लगा कि उसका ''परिवर्तन'' उन्हें भरोसे में लेने के लिए चतुराई से किया गया धोखा था ताकि वह हर एक मसीही को यरूशलेम ले जा सके और उन्हें बन्दीगृह में डाल सके!

यदि हम शाऊल की जगह होते, तो हम में से बहुतों ने कहा होता, ''यदि कलीसिया को मेरी आवश्यकता नहीं है तो मुझे भी उसकी आवश्यकता नहीं!'' और हम आहत भावनाओं के साथ नगर को छोड़ गए होते। तथापि, शाऊल एक दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति था। अन्तत:, उसे एक मित्र मिला, जिसे शान्ति का पुत्र कहकर पुकारा जाता था (4:36)। बर्टन कॉफ़मैन ने कहा कि आश्चर्य की बात यह नहीं कि कलीसिया ने शाऊल को स्वीकार नहीं किया, बल्कि ''अधिक आश्चर्य की बात यह है, ... कि उसे एक ऐसा व्यक्ति मिला ... जिसने पूरी तरह से यह विश्वास करके उसे सारी कलीसिया से मिलाने का साहस किया।'' वह व्यक्ति बरनबास था:

> परन्तु बरनबा उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर[17] उन से कहा, कि इस ने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा,[18] और उस ने इससे बातें की; फिर दमिश्क में इस ने कैसे हियाव से यीशु के नाम से प्रचार किया (आयत 27)।

बरनबास को शाऊल के बारे में इतनी जानकारी कैसे मिली? कई लोगों का अनुमान है कि बरनबास शाऊल को उसके मसीही बनने से पहले भी जानता था। बरनबास कुप्रुस से था (4:36), और कुप्रुस किलकिया से अधिक दूर नहीं था।[19] वह शाऊल को यरूशलेम में पहले भी मिला होगा। कई लोगों का विचार है कि बरनबास दमिश्क में गया और वहां उसने शाऊल के बारे में जानकारी प्राप्त की।[20] सम्भवत: सबसे अच्छी व्याख्या यह है कि

बरनबास ऐसा व्यक्ति था जो लोगों की अच्छाइयों में विश्वास रखता था और सदा उन्हें उत्साहित करना चाहता था![21] बरनबास ने शाऊल के समर्थन के लिए अपनी ख्याति और विश्वसनीयता का इस्तेमाल किया।

उस समय, पौलुस ने कोई मिशनरी यात्रा नहीं की थी अर्थात उसकी तेरह या चौदह[22] पत्रियों में से एक भी नहीं लिखी गई थी। यदि बरनबास वहां न होता तो हम आत्मिक रूप से कितने शक्तिहीन होते! हमें कितने कृतज्ञ होना चाहिए कि वह प्रेरितों को मनाने मना सका था, और प्रेरित यरूशलेम के शेष मसीहियों को मनाने मना सके थे।

जब शाऊल नगर में था तो पतरस ने उसे अपने घर ठहरने का निमन्त्रण दिया (गलतियों 1:18)। ''वह उन के साथ यरूशलेम में आता जाता रहा। और बेधड़क होकर प्रभु के नाम से प्रचार करता था'' (9:28, 29क)। शीघ्र ही क्षेत्र की सभी कलीसियाओं में समाचार फैल गया कि ''जो हमें पहिले सताता था, वह अब उसी धर्म का सुसमाचार सुनाता है, जिसे पहिले नाश करता था'' (गलतियों 1:23)।[23]

शाऊल ने सहनशीलता से अतीत की बाधा को दूर किया। उसने समझ लिया कि मसीही लोग उससे चौकन्ने क्यों थे। वह जानता था कि एक बार खोया हुआ विश्वास दोबारा पाने के लिए समय लगता है। उसने ठुकराए जाने को अपने उद्देश्य में रुकावट नहीं बनने दिया और अन्त में उसे स्वीकार कर लिया गया। यह सम्भव है कि आपका एक अतीत होगा जिसे भुला देना चाहिए। अपने भाइयों के साथ असहनशील न बनें; अपने आपको उनके दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न करें, और सहनशील बनें। जो स्वीकृति के लिए आस लगाए हैं और जो इसे भेंट-स्वरूप अर्पित कर सकते हैं, उनके लिए इफिसियों 4:1, 2 में पौलुस का परामर्श है: ''सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित, और *धीरज धरकर* प्रेम से एक दूसरे की सह लो।''

हठ की बाधा (9:29, 30; 22:17-21)

यरूशलेम में प्रचार करने के बाद शाऊल ने सबसे पहले यूनानी भाषा बोलने वालों के आराधनालयों में प्रचार किया,[24] जहां स्तिफनुस पहले प्रचार कर चुका था।[25] वहां उसका काम अधूरा था: ''और यूनानी भाषा बोलनेवाले यहूदियों के साथ बातचीत और वाद-विवाद करता था'' (9:29ख)। यूनानी शब्द का अनुवाद ''वाद-विवाद'' प्रेरितों के काम की पुस्तक में केवल प्रेरितों 6 अध्याय में ही एक बार फिर मिलता है, जहां हम पढ़ते हैं कि यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी ''*स्तिफनुस* से वाद-विवाद करने लगे'' (6:9)। जो काम स्तिफनुस ने आरम्भ किया था, उसे पूरा करने के लिए शाऊल वहां लौट आया।

यूनानी भाषा बोलने वालों का आराधनालय शाऊल के लिए अत्यधिक ख़तरनाक था। यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी जब स्तिफनुस का उत्तर न दे पाए, तो वे उससे घृणा करने लगे और उन्होंने उसे मार दिया। शाऊल के विरुद्ध उनकी घृणा उससे भी भयंकर थी, क्योंकि उनके विचार में वह एक पुनर्जात और विश्वासघाती था, जिसने उस मत का

परित्याग कर दिया था और उन्हें धोखा दिया था![26] इसलिए यह पढ़कर हमें आश्चर्य नहीं होता, ''परन्तु वे उसके मार डालने का यत्न करने लगे'' (9:29ग)! शाऊल को दमिश्क और अरब में लोगों को इतना क्रोधित करने में, कि वे उसे मार डालें, तीन वर्ष लगे। यरूशलेम में उसे केवल दो सप्ताह ही लगे थे (गलतियों 1:18)।

एक बार फिर, परमेश्वर की समयोचित चिन्ता (पूर्वप्रबन्ध) से, षड्यंत्र का पता चल गया; और फिर परमेश्वर की समयोचित चिन्ता में शाऊल को मसीही मित्र मिल गए जिन्होंने उसे बचा लिया। हम पढ़ते हैं, ''यह जानकर भाई उसे कैसरिया में ले आए, और तरसुस को भेज दिया'' (9:30)। कैसरिया फलस्तीन में यरूशलेम के उत्तर-पश्चिम की ओर लगभग सत्तर मील की दूरी पर एक मुख्य बन्दरगाह थी।[27] तरसुस शाऊल का गृहनगर था।[28]

प्रेरितों 22 हमें यरूशलेम से उसके प्रस्थान के बारे में विस्तृत जानकारी देता है, जिसका उल्लेख प्रेरितों 9 में नहीं किया गया।[29] प्रेरितों 22 में पौलुस ने ज़ोर दिया कि यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों द्वारा उसे मार डालने की इच्छा पर, उसके हाथ में होता, तो वह यरूशलेम में ठहरता:

> जब मैं फिर यरूशलेम में आकर मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था,[30] तो बेसुध हो गया।[31] और उसको देखा कि मुझ से कहता है; जल्दी करके यरूशलेम से झट निकल जा: क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी गवाही न मानेंगे। मैंने कहा; हे प्रभु वे तो आप जानते हैं, कि मैं तुझ पर विश्वास करनेवालों को बन्दीगृह में डालता और जगह-जगह आराधनालय में पिटवाता था। और जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लोहू बहाया जा रहा था तब मैं भी वहां खड़ा था, और इस बात में सहमत था, और उसके घातकों के कपड़ों की रखवाली करता था। और उसने मुझ से कहा, चला जा क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियों के पास दूर-दूर तक भेजूंगा (22:17-21)।

पहली और अन्तिम बार शाऊल ने प्रभु के साथ बहस की। ''मुझे लगता है कि मैं उन्हें समझा सकता हूं!'' उसने तात्पर्य के साथ संक्षेप में कहा ''और यदि मैं नहीं समझा पाता, तो मैं उसी प्रकार मरने के लिए तैयार हूं जैसे स्तिफनुस मरा!''[32] वस्तुतः, प्रभु ने उत्तर दिया, ''मैं तेरी मौत के लिए तैयार नहीं हूं! तेरा परम भाग्य अन्यजातियों में प्रचार करना अभी आगे है। तू यहां कुछ अधिक नहीं कर सकता। इस नगर को छोड़ दे, और जल्दी कर!'' शाऊल ने बहस बन्द कर दी और प्रभु की आज्ञा मान ली। उसने *हठ की बाधा को समर्पण से पार कर लिया।*

किसी नये मसीही को अति महत्वपूर्ण सुझाव जो मैं दे सकता हूं, वह यह है कि प्रभु पर भरोसा रखना सीखें और *उसकी* बुद्धि पर निर्भर रहें! यदि परमेश्वर आपको अपने वचन में कुछ करने की आज्ञा देता है, तो वह सही है, चाहे आप उसकी आज्ञा का कारण समझते हों या नहीं। बिना कोई प्रश्न किए उसकी आज्ञा मानना सीखें और फिर उसके आश्वासन पर निर्भर रहें ताकि वह आपको आशीष दे!

निराशा की बाधा (9:30)

शायद तरसुस में पहुंचकर शाऊल निराश हो चुका होगा। उसने यरूशलेम में अपने पुराने मित्रों में प्रचार करना चाहा था, परन्तु प्रभु ने कहा था, ''नगर से झट निकल जा।'' उसने वहां पर परिश्रम करना चाहा था जहां कलीसिया में रोमांचक घटनाएं हो रही थीं, परन्तु भाइयों ने उसे घर भेज दिया! कई बार हम अपने आत्मिक जीवन में निराश हो जाते हैं क्योंकि हमारे कुछ स्वप्न और योजनाएं होती हैं, जो साकार नहीं हो पातीं। मैं कई लोगों को जानता हूं जो इतने निराश हो गए थे कि उन्होंने अपना काम बीच में ही छोड़ दिया। शाऊल ने ऐसा नहीं किया। उसने *विश्वासी रहकर निराशा की बाधा को पार कर लिया।*

मेरा विश्वास है कि शाऊल का तरसुस में सात साल तक ठहरना, उसको महान मिशनरी कार्य के लिए तैयार करने की प्रभु की योजना का एक भाग था। तरसुस में, शाऊल को अपने परिवार और मित्रों के साथ सुसमाचार सुनाने का पहला अवसर मिला था।[33] यद्यपि उसने उन सब को परिवर्तित नहीं किया,[34] यह आवश्यक था कि वह सबसे निकटतम लोगों में अपने इस नये मिले विश्वास की बात करे।

फिर, शाऊल को तरसुस में कलीसियाएं स्थापित करने की अपनी योग्यता को संवारने का अवसर भी था। यरूशलेम से निकलकर वह ''सूरिया और किलिकिया के देशों में आया'' (गलतियों 1:21)।[35] बाद में, जब पौलुस और सीलास ने दूसरी मिशनरी यात्रा आरम्भ की, तो वे ''कलीसियाओं को स्थिर करते हुए, सूरिया और किलिकिया से होते हुए'' निकले (15:41)। वे मण्डलियां प्रथम मिशनरी यात्रा के मार्ग विवरण में नहीं थीं; सम्भवत: उनकी स्थापना तरसुस में शाऊल की सेवकाई के दौरान हुई।

इसके अलावा, शाऊल ने तरसुस में सहनशीलता सीखी। दमिश्क के मार्ग में, प्रभु ने शाऊल को बताया कि वह सुसमाचार को अन्यजातियों में ले जाएगा (26:15-18; तु. 9:15; 22:15)। तीन साल बाद, यरूशलेम में प्रभु ने वह चुनौती दोहराई (22:21)। तथापि, यह अन्यजातियों में शाऊल के पहले प्रचार करने से पूर्व सात और वर्ष थे![36] शाऊल ने ''यहोवा की बाट'' जोहना सीखना था (भजन 37:9)।[37]

अन्त में, मेरा विश्वास है कि शाऊल ने दुख सहना तरसुस में सीखा। बाद में उसने बार-बार कैद होने, यहूदियों से कोड़े खाने, रोमियों से बैंत खाने और तीन बार जहाजों के टूटने के विषय में लिखा।[38] जब तक शाऊल ने उन कष्टों के सम्बन्ध में लिखा, लूका ने केवल एक रोमी मार के बारे में (16:22, 23), एक बार कैद होने (16:23) के बारे में ही लिखा, परन्तु किसी यहूदी मार, और जहाज़ों के टूटने को दर्ज नहीं किया।[39] अलिखित घटनाओं में यदि बहुत सी नहीं, तो कुछ तो अवश्य ही शाऊल की किलिकिया और सूरिया में सेवकाई के सात-वर्ष में घटी होंगी।[40] शाऊल अध्याय 11 में क्रूस के अनुभवी सैनिक के रूप में पुन: दिखाई देगा, जो प्रभु द्वारा दिए गए किसी भी कार्य को करने के लिए तैयार है और शैतान द्वारा उसकी ओर फेंकी गई किसी भी बुराई को सहने के लिए तैयार है!

शाऊल यरूशलेम में ठहरना चाहता था, परन्तु प्रभु ने कहा कि उसे तरसुस में जाना चाहिए *और प्रभु सही था*। मसीह में, जब आप निराश भी हों, तो भी अपने स्वर्गीय पिता

पर दृढ़ विश्वास रखें। उसके और निकट आइए। उसे अपने वचन के द्वारा आपसे बात करने दीजिए। प्रार्थना में उसके साथ बात करें। खुद को उसके पास लाना सीखिए।

मेरी सबसे छोटी बेटी, एंजला का विवेक हमेशा स्वीकृति के लिए उपस्थित रहता है। जब वह बच्ची थी, तो बिस्तर पर रेंगने के बाद हर शाम, वह मुझे अपनी दिन भर की बातें बताती और अक्सर अपना मन हल्का कर लेती थी। कई बार, वह मुझे आधी रात को बचपन की शैतानियों को बताने के लिए जगा देती, जिनका स्मरण उसे सोने नहीं देता था। मेरी पत्नी और मैं अक्सर कहते, ''हो सकता है एंजी हमेशा ठीक न करे; परन्तु जब वह ठीक न करे, तो हमें पता है कि देर-सवेर वह हमें बता ही देगी।'' एंजी जानती है कि वह हमारे साथ बेझिझक है क्योंकि वह हमसे प्रेम करती है और हम पर भरोसा रखती है। इसी प्रकार, अपने प्रभु से प्रेम करें और उस पर भरोसा रखें। उसकी शक्ति और उसकी सम्भाल पर निर्भर रहें और उसके प्रति विश्वासी रहें जैसे तरसुस की निराशा में शाऊल विश्वासी रहा था।

सारांश

शाऊल को मसीही जीवन आसान नहीं लगा, परन्तु उसे यह असम्भव भी नहीं लगा। उसने पाया कि वह अपने प्रभु की सहायता से किसी भी बाधा को फांद सकता था (फिलिप्पियों 4:13)! हम भी फांद सकते हैं। यदि हम फांदते हैं, तो जीवन के अन्त में, अपनी दौड़ पूरी कर लेने के बाद प्रभु विजय का मुकुट देने के लिए हमारी प्रतीक्षा करता है। जैसे इस प्रेरित ने बाद में कहा ''भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी, जो उसके प्रकट होने को प्रिय जानते हैं'' (2 तीमुथियुस 4:8)।

अध्याय 9 लूका द्वारा पुस्तक में छोड़ी गई प्रगति रिपोर्टों में से एक के साथ समाप्त होता है: ''सो सारे यहूदिया, और गलील[41], और सामरिया में कलीसिया[42] को चैन मिला,[43] और उसकी उन्नति होती गई;[44] और वह प्रभु के भय[45] और पवित्र आत्मा की शान्ति[46] में चलती और बढ़ती जाती थी'' (9:31)। लूका के शब्द सारी कलीसिया के लिए हैं, परन्तु कलीसिया लोगों से अर्थात आप जैसे लोगों से ही बनती है। हम यह सुझाव देने के लिए कि यदि एक मसीही के रूप में शाऊल के जीवन में पाए जाने वाले सबक को आप सीखें,[47] तो आप व्यक्तिगत रूप से शान्ति का आनन्द लेंगे और आत्मिक रूप में उन्नति करेंगे! ''प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में'' चलते और बढ़ते हुए, आपको किसी और की आवश्यकता नहीं होगी बल्कि आप परमेश्वर की संतान के रूप में उन्नति कर सकते हैं! मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि आप ऐसा ही करें।

विजुअल-एड नोट्स

बाधाओं पर विचार अपने आप ही चित्र की एक प्रस्तुति की ओर ले जाता है। दौड़ के मैदान में बाधाओं की एक शृंखला बनाएं। उन पर ''असफलता,'' ''सताव,''

''अतीत,'' ''हठ,'' और ''निराशा'' चिपका दें। फिर उन बाधाओं को एक-एक करके पार करते हुए एक धावक का चित्र बनाएं (एक आसान सा चित्र, जिसे कोई बच्चा भी बना सकता हो, पर्याप्त होगा)। लिखें कि शाऊल ने हर एक बाधा को कैसे पार किया। शाऊल ने असफलता की बाधा को *विश्वास* से, सताव और अतीत की बाधा को *धैर्य* से, हठ की बाधा को *समर्पण* से, और निराशा की बाधा को *विश्वास* से पार किया।

प्रवचन नोट्स

प्रेरितों 9:31 का इस्तेमाल ''[स्थानीय मण्डली का नाम लें] के लक्ष्यों'' पर रचनात्मक प्रवचन के लिए किया जा सकता है: (1) आराम (''कलीसिया को चैन मिला''); (2) नवीनीकरण (''उसकी उन्नति होती गई''); (3) सम्मान (''वह प्रभु के भय और आत्मा में''); (4) सोते (''पवित्र आत्मा की शान्ति''); और (5) परिणाम (''में बढ़ती जाती थी'')।

पादटिप्पणियां

[1]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में 8:22, 24 पर नोट्स देखिए। [2]देखिए 1 कुरिन्थियों 3:1, 2; इब्रानियों 5:12-14. इन पदों का भाव यह भी है कि कभी भी परिपक्व न होने वाले मसीहियों का नाश हो सकता है! [3]उन्होंने यीशु के साथ और स्तिफनुस के साथ ऐसा ही करने की कोशिश की थी। [4]पौलुस के साथ अक्सर ऐसा ही होता था (14:4-6; 23:12-22)। लोग सामान्यत: पौलुस से या तो प्रेम करते थे या घृणा, वे भी जो मसीही नहीं थे। उसके गैर-मसीही मित्रों की दिलचस्पी आमतौर पर उसकी सुरक्षा में थी (19:31)। इस सब में, पौलुस की सुरक्षा के लिए परमेश्वर का पूर्वप्रबन्ध दिखाई देता है। [5]अरितास चतुर्थ नबतियन अरब राज्य पर शासन करता था। ''अरब'' जहां शाऊल ने कुछ समय बिताया। [6]शायद दमिश्क अस्थाई तौर पर अरितास के नियन्त्रण में था (इस दौरान दमिश्क में कोई रोमी सिक्का नहीं था)। शायद अरब की सेनाएं, फाटकों की निगरानी के लिए नगर के *बाहर* थीं (दमिश्क अरब मरुस्थल के निकट था)। शायद एथनार्क (राजा की ओर से हाकिम) के प्रयास व्यक्तिगत थे और जो कुछ नगर में अरबी जनसंख्या कर सकती थी (जो मानने योग्य था) उस तक ही सीमित थे। [7]ये दो गुट बहुत से कारणों से एक दूसरे से घृणा करते थे। कुछ वर्ष बाद (66 ई.), नबतियन अरबों ने दमिश्क में 10,000 से अधिक यहूदियों को मार गिराया। [8]यहूदियों की *काफ़ी* संख्या दमिश्क में रहती थी। [9]शाऊल ने दमिश्क में प्रचार करके हलचल मचा दी थी; उसने अरब में रहते हुए भी हलचल मचाई होगी! [10]''उसके चेले'' एक असामान्य शब्द है। इसका अर्थ कुछ भी हो, यह इस बात की ओर संकेत देता है कि शाऊल को दमिश्क में लोगों को मसीह में लाने करने में *कुछ* सफलता अवश्य मिली थी। निश्चित ही, पौलुस ने, कभी भी किसी को यह सोचने के लिए उत्साहित नहीं किया कि वे *उसके* पीछे चल रहे थे; बल्कि, उसने हमेशा लोगों को *यीशु* की ओर मोड़ा (1 कुरिन्थियों 1:12, 13)।

[11]इन दो वृत्तांतों में शब्द ''टोकरे'' के लिए दो भिन्न-भिन्न यूनानी शब्द हैं। प्रेरितों 9 में प्रयुक्त शब्द बड़े टोकरे के लिए है जिसे गोदाम के रूप में प्रयोग किया जाता था (मत्ती 15:37; मरकुस 8:8)। 2 कुरिन्थियों 11 में प्रयुक्त शब्द आम तौर पर एक जाल के लिए प्रयोग किया जाता था। इसका अर्थ हो सकता है कि टोकरे को ढीला बुना गया या इसे अतिरिक्त सुरक्षा के लिए एक जाल में डालकर लटकाया गया था।

[12]याद रखें कि उसने इस घटना को अपनी *निर्बलता* के एक उदाहरण के रूप में उद्धृत किया (2 कुरिन्थियों 11:30-33)। [13]इस प्रकार की घटनाएं अनेक मण्डलियों में घटी हैं। मेरे उदाहरण के स्थान पर यहां एक स्थानीय उदाहरण दिया जा सकता है। [14]गलतियों 1:18. यहूदी एक भाग को पूर्ण गिनते थे। यहूदी गणना से ''तीन वर्ष'' उस साल के शेष भाग जिसमें शाऊल दमिश्क को गया, अगला वर्ष, और फिर दमिश्क में से बच निकलने का वर्ष जो कुछ वर्षों में घटित हुआ था। [15]क्योंकि चेलों को तीन वर्ष पहले यरूशलेम से भगाया गया था (8:1), ये चेले कौन थे? कइयों ने आरम्भ में यरूशलेम को नहीं छोड़ा होगा (पृष्ठ 53 में 8:1 पर नोट्स देखिए), और कई लौट आए होंगे। (कुछ नये परिवर्तित भी रहे होंगे, परन्तु शब्द ''डरते'' से लगता है कि अधिकतर उनमें से थे जिन्हें आरम्भ में शाऊल ने सताया था।) क्योंकि ''सब'' चेले शाऊल पर संदेह करते थे, इनमें *प्रेरित* भी होंगे। [16]कई लोग हैरान होते हैं कि यरूशलेम में मसीहियों को शाऊल के मनपरिवर्तन का पता क्यों नहीं चला, क्योंकि वह तीन वर्ष पहले मसीह में आया था। सम्भवत: अनेक कारण हैं: (1) उन दिनों संचार के साधन बहुत अच्छे नहीं थे। (2) यदि उस समय दमिश्क पर अरितास चतुर्थ का नियन्त्रण था (एक सम्भावना जैसे पिछली टिप्पणी में ध्यान दिया गया), तो दमिश्क और यरूशलेम के बीच अब तक के सबसे कमज़ोर सम्बन्ध थे। (3) शाऊल के लम्बे समय से ''गायब'' होने से शंकाए बढ़ गई होंगी। तथापि, अति महत्वपूर्ण तथ्य यह था, कि शाऊल ने यरूशलेम में चेलों को बुरी तरह *आहत* किया था, और उसकी किसी भी बात पर विश्वास करना उनके लिए कठिन था। [17]प्रेरितों के काम की पुस्तक में यह अन्तिम बार है कि यरूशलेम में अगुओं के रूप में केवल प्रेरितों की ही बात की गई। गलतियों 1:18-20 में पौलुस की महत्वपूर्ण घोषणा के अनुसार, उस समय यरूशलेम में बारह प्रेरितों में से केवल पतरस ही वहां था (बाकी शायद प्रचार के लिए निकले हुए थे)। उसके अलावा, नगर में एकमात्र अगुआ प्रभु का सौतेला भाई याकूब ही था (गलतियों 1:19)। यह लूका के कथन के साथ कैसे मेल खा सकता है कि शाऊल को ''प्रेरितों के पास'' लाया गया था? शायद लूका पतरस को सभी प्रेरितों का प्रतिनिधि मानता होगा, या शायद लूका ''प्रेरितों'' शब्द का प्रयोग बारह से व्यापक अर्थ में ले रहा होगा (जैसे उसने 14:4, 14 में किया) और उसमें याकूब को शामिल कर रहा होगा। याद रखें कि ''प्रेरित'' शब्द का अर्थ है ''भेजा हुआ'' और सामान्य अर्थ (''कलीसिया द्वारा ठहराया हुआ,'' आदि) के साथ-साथ ''बारह और पौलुस'' के लिए विशेष अर्थ में भी इस्तेमाल हो सकता है। [18]यह ज़ोर दिया जाता था कि शाऊल ने यीशु को न केवल *सुना* बल्कि उसे *देखा* भी था। [19]पृष्ठ 126 पर मानचित्र देखिए। तरसुस एक महत्वपूर्ण नगर था। बरनबास कुप्रुस से तरसुस को बहुत बार आ सकता था। [20]यह भी हो सकता है कि बरनबास को कलीसिया द्वारा भेजा गया हो जैसे उसे बाद में अन्ताकिया में भेजा गया (11:22), या हो सकता है वह अपने निजी काम से दमिश्क गया हो।

[21]एक और सुझाव जो दिया गया है वह यह है कि बरनबास शाऊल को चमत्कारी ढंग से जानता था (13:1 के अनुसार, बरनबास आत्मा की प्रेरणा प्राप्त एक भविष्यवक्ता या आत्मा की प्रेरणा प्राप्त एक शिक्षक था)। तथापि, यदि ऐसा था, तो प्रेरितों ने उसी सूचना को पाने के लिए अपनी शक्तियों का प्रयोग क्यों नहीं किया? [22]यदि पौलुस ने इब्रानियों की पत्री लिखी तो हमारे पास उसकी चौदह पुस्तकें हैं। [23]पौलुस ने गलतियों 1:22, 23 में स्पष्ट किया कि तब, ''यहूदिया की कलीसियाओं ने जो मसीह में थीं'' उसका मुंह नहीं देखा था। ''यहूदिया की कलीसियाएं'' यरूशलेम की कलीसिया के *अलावा* यहूदिया की सभी मण्डलियां होंगी। पौलुस के थोड़ी देर ठहरने के कारण (केवल पन्द्रह दिन) उसे यरूशलेम के बाहर जाकर प्रचार करने का समय नहीं मिला। [24]यह इस तथ्य में निहित है कि वह ''यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों के साथ बोलता और बहस करता था।'' [25]शाऊल स्तिफनुस को वहां पहली बार मिला होगा (इस भाग में 6:9,10 पर नोट्स देखिए)। [26]जिसने पहले किसी लहर में भाग लिया हो और फिर उसे छोड़कर उसका विरोध करे तो उससे सामान्यत: उन लोगों से अधिक घृणा की जाती है जो उस लहर का विरोध करते हैं परन्तु उसका भाग कभी नहीं रहे। शाऊल के प्रति यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों की घृणा को दर्शाने के लिए इस प्रकार के व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया जा सकता है। [27]पृष्ठ 126 पर मानचित्र और 10:1 पर नोट्स देखिए। [28]पृष्ठ 126 पर मानचित्र और पृष्ठ 96 पर तरसुस पर नोट्स देखिए। [29]बहुत से लोग इस घटना को शाऊल के यरूशलेम

जाने से जोड़ते हैं जैसे 11:27-30; 12:25 में दर्ज है, परन्तु उस यात्रा में शाऊल के यरूशलेम में प्रचार करने का हमारे पास कोई प्रमाण नहीं है और न ही कोई संकेत है कि उस अवसर पर उसे अचानक नगर छोड़ना पड़ा था। क्योंकि 22:17-21 की कहानी से मुझे लगता है कि यह 9:29, 30 से बिल्कुल मिलती है, इसलिए मैंने इसे यहां शामिल किया है। [30]बाद के एक भाग में 21:26 पर नोट्स देखिए।

[31]10:10 पर नोट्स देखिए। [32]जहां पौलुस को लगा कि वह सही है, मौत की धमकी से भी नहीं डरता था (तु. 20:24)। मरने के विषय में ''जैसे स्तिफनुस मरा,'' मरते समय स्तिफनुस के कथन जैसा एक कथन देखने के लिए देखिए 2 तीमुथियुस 4:16ख। [33]कितना आघात पहुंचाने वाला दृश्य होगा जब, अपने मनपरिवर्तन के बाद, शाऊल पहली बार अपने पिता को मिला था, जिन्होंने उसकी पालना एक फरीसी बनाने के लिए की थी! [34]हो सकता है कि वह अपनी बहन को मसीह में किया हो; कम से कम वह उसके लिए बाहर का आदमी नहीं था जैसे कि वह अपने परिवार के दूसरे सदस्यों के लिए था (23:16)। कइयों के विचार से रोमियों 16:7,11, 21 शरीर में ''कुटुम्बियों'' (अर्थात, परिवार) के लिए है। [35]पृष्ठ 126 पर मानचित्र देखिए। तरसुस किलिकिया में था, और सूरिया किलिकिया से पूर्व की ओर स्थित था। तब सूरिया और किलिकिया ने एक संगठित महाप्रांत बनाया। [36]*पहले* अन्यजाति और उसके परिवार में पतरस के प्रचार करने के बाद (प्रेरितों 10; तु. 15:7-9), *फिर* अन्यों ने सूरिया के अन्ताकिया में अन्यजातियों में प्रचार किया (11:20)। जब शाऊल अन्ताकिया में आया, तो उसने सम्भवत: अन्यजातियों में पहली बार प्रचार किया (11:25, 26)। किसी भी कीमत पर, 15:7-9 में पतरस के शब्द यदि सारे नहीं, तो अधिकतर उस समय जो उसने तरसुस में बिताया, अन्यजातियों में शाऊल के प्रचार की तैयारी के लिए थे। [37]पौलुस के सीखने के लिए यह एक महत्वपूर्ण सबक था। जैसा कि हम बाद में देखेंगे, पौलुस की योजनाएं हमेशा प्रभु की योजनाएं नहीं होती थीं, परन्तु आगे बढ़ने से पहले प्रभु के ''हां'' कहने तक वह प्रतीक्षा करना चाह रहा था। [38]2 कुरिन्थियों 11:23-25. दूसरा कुरिन्थियों मकदूनिया से शाऊल की तरसुस में सेवकाई के बारह या अधिक वर्षों के बाद तीसरी मिशनरी यात्रा के अन्त के निकट लिखा गया (अगले एक भाग में 20:1, 2 पर नोट्स देखिए)। [39]प्रेरितों 27 में जहाज़ का टूटना 2 कुरिन्थियों लिखे जाने के *बाद* हुआ। [40]शाऊल निश्चित ही वैसा ही आक्रामक था जैसा वह पहले दमिश्क, अरब, और यरूशलेम में था और जैसा वह बाद की अपनी मिशनरी यात्राओं में था। यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि शाऊल लगातार धार्मिक अगुओं के साथ उलझता रहा।

[41]हमें गलील में सुसमाचार के प्रचार का विशेष उल्लेख नहीं मिला था। संभवत: बिखर जाने वाले चेलों ने यहां पर सुसमाचार का प्रचार किया (8:1, 4)। [42]कुछ प्राचीन लेखों में यहां ''कलीसिया'' बहुवचन के रूप में मिलता है (देखिए KJV में), परन्तु और प्राचीन लेखों में अधिक एकवचन है जो कि प्रेरितों के काम में ''कलीसिया'' शब्द का असामान्य प्रयोग है। यद्यपि इन तीन प्रांतों में काफ़ी संख्या में मण्डलियां थीं (गलतियों 1:22), लूका ने फलस्तीन के सभी मसीहियों को उस क्षेत्र में ''कलीसिया'' के रूप में देखा। [43]शैतान ने कलीसिया को लम्बे समय के लिए नहीं छोड़ना था। इस संदर्भ में, मुख्य विचार कलीसिया को ''चैन मिला'' लगता है क्योंकि सताने वाला परिवर्तित हो चुका था। यह भी संकेत हो सकता है कि कलीसिया ने शान्ति पाई क्योंकि शाऊल उस क्षेत्र से जा चुका था (यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों को निशाना बनाए बिना)। [44]मसीही लोग वचन के द्वारा दृढ़ होते हैं (20:32)। यह समय चैन का तो था, आत्मसंतोष का नहीं। ''उन्होंने अपने जहाज़ों को अगले तूफ़ान की मार के आरम्भ होने से पहले मरम्मत तथा दृढ़ करने के लिए अवसर का लाभ उठाया'' (वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे)। [45]देखिए नीतिवचन 1:7; 9:10; 10:27; 14:27; सभोपदेशक 12:13. [46]यह संभवत: उस आराम और उत्साह की बात है जो मसीहियों में वास करने वाला आत्मा हर एक को देता है। ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में पृष्ठ 185 पर देखिए ''पवित्र आत्मा क्या करता है?'' [47]इस और पिछले पाठ में दिए गए सुझावों पर पुनर्विचार कीजिए।